11

आपका विवाह सफल हो सकता है ...

ईश्वरीय लक्ष्यों को ठहराने से

विवाह होने पर आप दोनों के सामने ''हम मिलकर आगे जीवन में क्या करना चाहते हैं?'' का सवाल आता है। चाहे आपने यह निर्णय ले लिया हो कि विवाह के लिए आपका लक्ष्य किसी भी बात से बढ़कर परमेश्वर को भाने और स्वर्ग में जाने का है,[1] आपके सामने सवाल फिर रहेंगे। ''हम प्रभु की सेवा बेहतरीन ढंग से कैसे कर सकते हैं?''; ''हम कैसा काम करेंगे?''; ''अपने व्यक्तिगत कारोबार में हम ठहराव करने की उम्मीद करते हैं'' आपको लम्बी अवधि की योजनाएं बनानी पड़ेंगी, जैसे यह कि आप कहां रहेंगे, भूमि के छोटे से टुकड़े पर खेती करेंगे या नहीं, या कोई कारोबार करेंगे, और बुढ़ापे में आप क्या करेंगे? आप यह निर्णय कैसे लेंगे? आप अपने विवाह के लिए लक्ष्य कैसे निर्धारित कर सकते हैं?

लक्ष्य ठहराने की आवश्यकता को समझें

लक्ष्य ठहराने की आवश्यकता को समझ लें। किसी ने कहा है, ''यदि आप किसी बात पर निशाना नहीं लगाते, तो यह लग ही जाएगा।'' मसीही दम्पत्ति का अन्तिम लक्ष्य परमेश्वर की सेवा करना और स्वर्ग में जाना ही है और हर लक्ष्य बदल सकता है पर आप मिलकर जीवन में क्या पाना चाहते हैं और भविष्य को कैसे देखते हैं। एच. नॉरमन राइट ने कहा है,

> लक्ष्यों से आपके जीवन को दिशा मिलती है। ... वे आने वाले समय के लिए हो सकती है। इसलिए वे आपको वर्तमान की कई कठिनाइयों से उभार सकते हैं। आपका ध्यान आने वाली साकारात्मक आशाओं पर हो सकता है। ... लक्ष्यों से आपके समय को और प्रभावशाली बोध से इस्तेमाल करने में सहायता मिलेगी, क्योंकि वे आपको यह चुनने में सहायता करते हैं कि कौन सी बात महत्वपूर्ण है और कौन सी नहीं।[2]

जीवन में लक्ष्य लेकर चलने वाला व्यक्ति उस लक्ष्य को पाने के लिए देर तक कठिन परिश्रम करने को तैयार रहता है। उदाहरण के लिए स्कूल में पढ़ाने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति पूरा समय काम करने को टालता है और डिग्री पाने के लिए देर तक भलाई करने के योग्य होने के लिए पढ़ाई में अधिक समय देता है।

अपने जीवन के हर क्षेत्र के लिए लक्ष्यों का होना

मिलकर अपने जीनव के हर क्षेत्र के लिए लक्ष्य ठहराने पर विचार करें। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में लक्ष्य ठहराकर आप अच्छा करेंगे:

(1) *आपका आत्मिक जीवन।* आप मसीह और कलीसिया के लिए मिलकर क्या पाना चाहते हैं।[3]

(2) *आपका व्यक्तिगत जीवन।* आप परमेश्वर द्वारा दिए तोड़ों और रुचियों को कैसे बढ़ा सकते हैं?

(3) *आपका वैवाहिक जीवन।* आप भविष्य में किस प्रकार का विवाह पाना चाहते हैं?

(4) *आपकी शिक्षा।* आप अपने लिए कैसी शिक्षा चाहते हैं और आपको कैसी शिक्षा की आवश्यकता है? आप अपने बच्चों के लिए शिक्षा के क्या लक्ष्य ठहराते हैं?

(5) *आपका काम या करोबार।* आप अपने काम में क्या प्राप्त करते हैं?

(6) *आपका समाज, नागरिक और राजनैतिक।* आप जिन समाज में रहते हैं उसके लिए आप क्या करना चाहते हैं? आप कैसा सम्बन्ध बनाना चाहते हैं?

लम्बी अवधि और कम अवधि के लक्ष्य बनाएं

लक्ष्य लम्बी अवधि के भी होते हैं और छोटी अवधि के भी। आपका अन्तिम लक्ष्य यीशु की सेवा करना, परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना और स्वर्ग में जाना होना चाहिए। उस लक्ष्य के अलावा (और उसके साथ), आपको इस जीवन के लिए लम्बी अवधि के कुछ लक्ष्य रखने चाहिए। जैसे यह कि आप अपने काम में क्या प्राप्त करने की उम्मीद करते हैं, आप कई साल बाद अपने विवाह को कैसा बनाना चाहते हैं, और एक बुजुर्ग दम्पत्ति के रूप में आप क्या करेंगे। फिर आपको अपने लम्बी अवधि के लक्ष्यों को पाने में सहायता के लिए छोटी अवधि के लक्ष्य भी ठहराने की आवश्यकता है।

उदाहरण के लिए यदि लम्बी अवधि का लक्ष्य खुशहाल, देर तक चलने वाला वैवाहिक जीवन, तो छोटी अवधि के आपके लक्ष्यों में हर साल विवाह पर कई पुस्तकें या लेख पढ़ना और अपने दोनों के लिए अलग से समय निकालना हो सकता है।

एक-दूसरे को सन्तुष्ट करने वाली लक्ष्य ठहराने वाली प्रक्रिया बनाएं

लक्ष्य ठहराने वाली और निर्णय लेने वाली प्रभावी प्रक्रिया का इस्तेमाल करें। आपके लक्ष्यों और निर्णयों से आप दोनों प्रभावित होंगे। इसलिए आपको किसी ऐसे प्रबन्ध पर सहमत होना चाहिए, जो दोनों को सन्तुष्ट करता है।

निर्णय लेने में पति और पत्नी की भूमिका

निर्णय लेने की प्रक्रिया में प्रमुखता किसे मिलनी चाहिए? बाइबल के दृष्टिकोण से चाहे पति घर का मुखिया है (देखें इफिसियों 5:22-24), पर उसे परिवार को प्रभावित करने वाले बड़े निर्णय अपनी पत्नी से विचार करने के बाद ही लेने चाहिए। मसीही पति को वही करना चाहिए जो उसे लगता है कि उसकी पत्नी के लिए बढ़िया है!

परन्तु व्यवहार में यह नियम कुछ जटिल हो जाता है। मसीही विवाह प्रत्येक का एक दूसरे को समर्पित होना है परन्तु अन्ततः निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी पति की है। उसे यह निर्णय अपनी पत्नी की इच्छाओं और आवश्यकताओं का ध्यान में रखते हुए लेना चाहिए। उसके साथ उसे परमेश्वर के भय में अपने परिवार के लिए अगुआई देने और उपाय करने के योग्य होने के लिए जो भी आवश्यक हो, करना चाहिए। समय के साथ, उसके लिए, विवाह के लिए और परिवार

के लिए जो भी अच्छा हो उसे पाने के लिए वह छोटी अवधि के अपने लक्ष्य बनाएं, चाहे वे पत्नी की इच्छाओं से मेल न खाते हों।

पत्नी के लक्ष्यों की समस्या

अपने पति को सम्पर्ण करते हुए मसीही पत्नी को कई बार अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों में निराशा मिलती है। किसी स्त्री की सहायता कैसे की जा सकती है, जो परमेश्वर को भाती हो और उसे और उसके पति दोनों को संतुष्ट करती हो?

(1) *वह अपनी इच्छाओं को दबा सकती है।* उसके लिए अपने लक्ष्य को बदलना सम्भव हो सकता है ताकि उसे अपने पति के सही काम में और एक मसीही स्त्री और पत्नी के रूप में अपनी भूमिका में सन्तुष्टि मिले? अन्य शब्दों में वह अपनी अभिलाषाओं में जहां तक हो सकें, अच्छी मसीही पत्नी और मां होने के लिए नई दिशा दे सकती है।

(2) *वह कुछ लक्ष्य को टाल सकती है।* अपने पति की स्वीकृति से बनाने के लिए मसीही स्त्री के लिए यह आम बात है। बच्चे जब छोटे होते हैं तो मां दिन भर घबराती है। जब वे बड़े हो जाते हैं तो वह अपनी रुचियों की ओर ध्यान देते हैं। अपने पिता के प्रोत्साहन से वह अपनी अभिलाषाओं को पूरा करने की कोशिश कर सकते हैं।[4]

(3) *उसके लक्ष्य प्रमुख हो सकते हैं।* कम से कम कुछ समय के लिए। एक तीसरी सम्भावना यह है कि पत्नी-पति के प्रोत्साहन से काम के अपने क्षेत्र को चुने। कई बार पत्नी का व्यवसाय परिवार की आय का मुख्य स्रोत होता है। पति किसी ऐसी जगह नौकरी कर रहा हो सकता है जहां वेतन कम हो, या वह घर में बच्चों की देखभाल का जिम्मा ले सकता है। ऐसा प्रबन्ध आवश्यक नहीं कि वचन का उल्लंघन हो।[5]

बदलते लक्ष्यों की अनुमति दें

इस बात को समझें कि समय के साथ-साथ आपके लक्ष्य बदल सकते हैं। जवीन का एकमात्र न बदलने वाला सच यह है कि यह परिवर्तिनीय है। समय के साथ *लोग बदल जाते हैं।* परन्तु पति और पत्नी में नई दिलचस्पियां बनती हैं। इसके अलावा, परिस्थितियां बदल जाती हैं। जिस नौकरी को करने की ट्रेनिंग उसने पाई थी हो सकता है कि वह तकनीक के आ जाने से खत्म हो जाए। रोज़गार के अदृश्य अवसर, आर्थिक तंगी, व्यक्तिगत समस्याएं, बच्चे हो जाना, बीमारी, परिवार की समस्या इनमें से कोई भी बात दम्पत्ति के जीवन में हलचल पैदा कर सकती है।

बदलाव आने पर आप अपने लक्ष्यों का क्या कर सकते हैं? आपके लक्ष्य अनुकूल होने चाहिए। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति के लिए एक नौकरी को छोड़कर किसी दूसरी तरह का काम आरम्भ करना बड़ा ही आम है। आम तौर पर आदमी की उम्र और उसकी परिस्थितयों के बढ़ने से, वह अधिक से अधिक धन कमाने की कोशिश में किसी ऐसे काम को करने पर ध्यान देने के लिए अपना काम बदल सकता है, जिससे दूसरों की सहायता कर सके। उदाहरण के लिए प्रचारक, शिक्षक या कौंसलर के रूप में। स्पष्टतया यह उत्पन्न होने पर परिवार के लक्ष्य बदल जाते हैं। मसीही दम्पत्ति के लिए किसी भी बड़े परिवर्तन का निर्णय लेना एक-दूसरे की सन्तुष्टि को ध्यान में रखकर होता है।

परिस्थितियों के साथ लक्ष्य बदल जाते हैं। इसलिए एक दम्पत्ति के रूप में आपको और आपके पति या पत्नी को निरन्तर अपने लक्ष्यों का पुनः मूल्यांकन करते रहना चाहिए। कोई दम्पत्ति विशेष प्रश्नों की चर्चा के लिए हर वर्ष योजना बना सकता है: ''क्या हम अपने लक्ष्यों को पा रहे हैं?''; ''हमें अपने लक्ष्य कैसे बदलने चाहिए?''; ''किन लक्ष्यों को छोड़ देना चाहिए?''; ''किन नये लक्ष्यों को अपनाना चाहिए?''

परमेश्वर की अगुआई में

लक्ष्य निर्धारित करने और निर्णय लेने के समय परमेश्वर का ध्यान रखें। दम्पत्ति के रूप में हर निर्णय में उसकी सेवा और उसे भाना आपकी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

(1) लक्ष्य ठहराने पर विचार करते हुए *उसके निर्देशन के लिए प्रार्थना करें*; उसकी अगुआई मांगें। उसे बताएं कि आप वह करना चाहते हैं जो वह आपसे करवाना चाहता है। फिलिप्पियों 4:6 कहता है, ''किसी भी बात की चिन्ता मत करो, परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं।''[16]

(2) अपने लक्ष्यों को पाने में *उसकी सहायता पर योजना बनाएं।* परमेश्वर के लिए और कलीसिया की बढ़ौतरी के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाएं। यह मानते हुए कि परमेश्वर आपकी कल्पना से कहीं अधिक कर सकता है, उससे अधिक पाने की कोशिश करें, जो आपको लगता है कि आप पा सकते हैं। फिलिप्पियों 4:13 (''जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूं'') और इफिसियों 3:20 (''[परमेश्वर] ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है'') जैसी आयतों को ध्यान में रखें।

(3) *उपाय के लिए उसकी अगुआई को मानने को तैयार रहें।* मसीही लोगों का मानना है कि परमेश्वर अपने संसार में सक्रिय है। जब आप अपनी योजनाओं के सम्बन्ध में प्रार्थना करते हैं, तो हो सकता है कि वह कुछ दरवाज़ों को बन्द कर के जबकि दूसरे दरवाज़े खोल दे। यह जानना तो असम्भव है कि परमेश्वर अपने उपाय के अनुसार आपके जीवन में क्या कर रहा है, पर आपको उन खुले हुए दरवाज़ों और बन्द दरवाज़ों का यह समझने में सहायता के लिए परमेश्वर का तरीका मानना चाहिए कि वह क्या करे।

उदाहरण के लिए मसीही दम्पत्ति को यह पता होना चाहिए कि अपने लक्ष्यों को पूरा करने की कोशिश करते हुए उन्हें आज्ञात निराशाएं और यहां तक कि त्रासदियों का सामना भी करना पड़ सकता है। परन्तु परमेश्वर कठिन समयों में अपने उपाय के अनुसार अपने लोगों की अगुआई करता है। आपके जीवन में कुछ भी हो जाए, आप पक्का मान सकते हैं कि आपके साथ जो कुछ भी होता है परमेश्वर उसमें से भलाई निकाल सकता है और निकाल देगा (रोमियों 8:28)।

सारांश

विवाह होने पर आप और आपका साथी जीवन के बहाव में बहने या किसी उद्देश्य के लिए जीने का चयन कर सकते हैं। कई बार, परमेश्वर के अनुग्रह से भविष्य के लिए योजना न बनाने वाले लोगों को अद्भुत आशिषें मिल जाती हैं, पर आपको ऐसा होने की प्रतीक्षा नहीं करनी

चहिए, बल्कि अपने विवाह में आप दोनों को छोटी अवधि और लम्बी अवधि के एक-दूसरे को सन्तुष्ट करने वाली लक्ष्य अपनाने की योजना अपनानी चाहिए। जिससे दोनों को सन्तुष्टि मिले और पमेश्वर को महिमा। ऐसा करने से।

टिप्पणियां

[1]''अपने विवाह को आत्मिक नींव पर बनाना।'' पाठ की समीक्षा करें। [2]एच. नॉरमन राइट, *सो यू आर गैटिंग मैरिड* (वैंचुरा, कैलिफोर्निया: रीगल बुक्स, 1985), 114. [3]पौलुस का एक लक्ष्य था। उसने कहा, ''मैं केवल एक काम करता हूं ... कि आगे की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है'' (फिलिप्पियों 3:13ख, 14; देखें 1 कुरिन्थियों 9:26, 27)। यह प्रमाण कि उसने उस लक्ष्य को पा लिया 2 तीमुथियुस 4:7, 8 में मिलता है। आपके आत्मिक लक्ष्यों में ''[मसीह] के स्वरूप में होना'' (रोमियों 8:29); ''सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ना'' (इफिसियों 4:15); ''मसीह में सिद्ध'' होना (कुलुस्सियों 1:28); मसीह के जैसे बनना (1 कुरिन्थियों 11:1; 1 पतरस 2:21) होने चाहिए। आपको दूसरों को सुसमाचार सिखाने के द्वारा मसीह के ग्रेट कमीशन को पूरा करने में अपना योगदान देने की योजना बनानी चाहिए (मत्ती 28:19, 20)। पृथ्वी पर मसीही व्यक्ति का अन्तिम लक्ष्य यह कहने के योग्य होना है, ''अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है'' (गलातियों 2:20ख)। [4]मसीही स्त्री के लिए एक सम्भावना यह है हैरिटेज क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी में अनुबन्ध इन्सट्रक्टर सिंथिया गायी से मिली। कॉलेज में उसके किसी शिक्षक ने प्रस्ताव दिया कि स्त्री अपने जीवन को बीस वर्ष के तीन सम्भावित अन्तरालों में बांट सकती है। पहले बीस वर्ष बड़ा होने में बीत सकते हैं। दूसरे बीस वर्ष अपने परिवार को समर्पित होने, अपने प्रति को प्रोत्साहित करने और बच्चों को बड़ा करने में सहायता देते हुए बीत सकते हैं। तीसरे बीस वर्ष न केवल अपने परिवार पर बल्कि दूसरों पर भी ध्यान देने वाले हो सकते हैं; वह कलीसिया और समाज के लिए लाभ के लिए पूर्णकालिक काम कर सकती है। (सिंथिया गाई, लेखक के साथ व्यक्तिगत बातचीत, हैरिटेज क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी, फलोरेंस, अलाबामा, अगस्त 2005.)। [5]पत्नी के परिवार की आमदनी का मुख्य स्रोत होने पर भी पति ''पत्नी का सिर'' हो सकता है (इफिसियों 5:22-24) और उसके अधीन हो कर वह ''घर की देखभाल'' कर सकती है (देखें 1 तीमुथियुस 5:14; तीतुस 2:5)। [6]मत्ती 7:7, 8; 1 यूहन्ना 5:14 भी देखें।